विप्लव गायन

सप्रसंग व्याख्या

1. *कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ*
जिससे उथल पुथल मच जाए,
एक हिलोरे इधर सें आए,
एक हिलोर उधर से आए।
सावधान! मेरी वीणा में
चिनगारियाँ आन बैठी हैं,
टूटी है मिज़राबें, अँगुलियाँ
दोनों मेरी ऐंठी हैं। *(पृष्ठ संख्या-141)*

शब्दार्थ–***तान***–गीत। ***उथल-पुथल***–हलचल। ***हिलोर***–लहर। ***मिजराबें***–वीणा बजाते समय अँगुलियों में पहनते हैं। ***ऐंठी***–अकड़ी।

प्रसंग–उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'वसंत भाग–2' में संकलित कविता 'विप्लव गायन' से उद्धृत हैं। इसके रचयिता बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हैं। इन पंक्तियों में क्रांति का आह्वान किया गया है।

व्याख्या–कवि ऐसे गीत का आह्वान कर रहा है जो क्रांति मचा दे, परिवर्तन की लहर उत्पन्न कर दे। कवि सावधान करता हुआ कहता है कि यह गीत जीवन रूपी वीणा में चिंगारियाँ पैदा कर सकता है, शांति नष्ट हो सकती है तथा यह परिवर्तन भयंकर कष्ट प्रदान कर सकता है। क्रांति का यह गीत वर्तमान व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर सकता है, जिससे जीवन अस्त-व्यस्त होने की संभावना है।

2. *कंठ रुका है महानाश का*
मारक गीत रुद्ध होता है,
आग लगेगी क्षण में, हत्तल में
अब क्षुब्ध-युद्ध होता है।
झाड़ और झंखाड़ दग्ध है
इस ज्वलंत गायन के स्वर से,
रुद्ध-गीत की क्रुद्ध तान है
निकली मेरे अंतरतर से। *(पृष्ठ संख्या-141)*

शब्दार्थ–***कंठ***–गला। ***महानाश***–विनाश। ***मारक गीत***–मृत्यु तथा विनाश का गीत। ***रुद्ध***–रुका। ***क्षण***–पल। ***हत्तल***–अंतरतम, हृदय की गहराई। ***क्षुब्ध***–क्रुद्ध, दुखित एवं चिंतित। ***दग्ध***–जले हुए। ***ज्वलंत***–जलते हुए। ***अंतरतर***–हृदय की गहराई।

प्रसंग–उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'वसंत भाग 2' में संकलित कविता 'विप्लव गायन' से उद्धृत हैं। जिसके रचयिता बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हैं। इनमें क्रांति का आह्वान किया गया है।

व्याख्या–क्रांति के गीत से जो परिस्थितियाँ उत्पन्न होती है, उससे महाविनाश का कंठ रुक जाता है तथा मृत्यु का गीत अवरुद्ध हो जाता है। अर्थात् परिवर्तन की माँग जब भी उठती है, उतनी ही तेजी से उसके दमन का प्रयास आरंभ होता है परंतु कवि कहता है कि यह अवरोध अधिक देर तक रुकने वाला नहीं है। हृदय में वर्तमान व्यवस्था के प्रति जो आक्रोश उत्पन्न हो चुका है, वह क्षण भर में सब कुछ भस्म कर देगा। जैसे ही यह आक्रोश फूटता है, हृदय में रुके क्रांति गीत की तान निकलती है, उस ज्वलंत गीत के स्वर से समस्त अवरोध नष्ट हो जाते हैं। जड़ता, रूढ़ियाँ तथा कुरीतियाँ पलक झपकते ही समाप्त हो जाती हैं।

3. *कण-कण में है व्याप्त वही स्वर*
रोम-रोम गाता है वह ध्वनि,
वही तान गाती रहती है,
कालकूट फणि की चिंतामणि।
आज देख आया हूँ–जीवन के
सब राज़ समझ आया हूँ,
भ्रू-विलास में महानाश के
पोषक सूत्र परख आया हूँ। *(पृष्ठ संख्या-141, 142)*

शब्दार्थ–***व्याप्त***–समाया हुआ। ***स्वर***–आवाज, ध्वनि। ***कालकूट***–विष। ***फणि***–शेषनाग। ***चिंतामणि***–मणि रूपी चिंता। ***राज़***–रहस्य। ***भ्रू-विलास***–भृकुटि का इशारा। ***पोषक-सूत्र***–शक्तिदायक तत्व। ***परख***–पहचान।

प्रसंग–उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'वसंत भाग–2' में संकलित कविता 'विप्लव गायन' से उद्धृत हैं। जिसके रचयिता बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हैं। इनमें क्रांति का आह्वान किया गया है।

व्याख्या–क्रांति का स्वर समस्त जगत के कण-कण में समा जाता है और फिर हर ओर से उसी की प्रतिध्वनि सुनाई देने लगती है। जिस प्रकार शेषनाग मणि की चिंता नें डूबा रहता है उसी प्रकार समस्त मानव समाज नवनिर्माण के चिंतन में डूब जाता है। कवि समाज में बदलाव लाने वाली परिस्थितियों से पूर्व परिचित है। अतः वह कहता है कि विचारों तथा नजरिए में आए एक परिवर्तन से महाविनाश का आरंभ हो जाएगा और उसके बाद ही राष्ट्र तथा समाज का नवनिर्माण संभव हो सकेगा।